पाठमाला

पहिला भाग

मैकमिलन एण्ड कम्पनी, लिमिटेड

भूमिका ।

बालकों के पढ़ने की पुस्तकों में तीन बातें होनी चाहिए
ली यह है कि वे बहुत ही मनोहर हों, जिससे कि बाल
जी लगाकर पढ़ें ; दूसरी भाषा और लेख ऐसे हों f
कों की समझ में सब बातें आ जायँ ; तीसरी पाठ ऐ
कि उनसे बालकों की बुद्धि भी बढ़े और उनके आच
सुधरें ।

इस श्रेणी की पुस्तकें लिखने में यही तीन बातें ध्यान
ी गई हैं । कहानियों की रीडरें अङ्गरेज़ी में तो बह
ी और पढ़ाई जाती हैं परन्तु उर्दू और हिन्दी में अ
लित नहीं हुईं । हमारी पुस्तकें अपने प्रकार की पह
कें उर्दू और हिन्दी में छापी जाती हैं । इनमे केव
ानियाँ ही नहीं किन्तु जीवन-चरित्र और ऐतिहासि
य भी हैं, यह बालकों को मनोहर ही नहीं प्रतीत होंग
न् उनकी बुद्धि भी बढ़ाएंगी और आचार भी सुधारेंग
थ ही भाषा बड़ी सरल है । एक लम्बी कहानी भी प्रत्ये
र में दी गयी है कि बालकों को साधारण पुस्तकों

और रूखे फीके नहीं हैं, किन्तु अङ्गरेज़ी पद्यों के प्रकार लिखे गये हैं और सुगम मनोहर और शिक्षादायक हैं। ऐसे पद्य बालक बड़े चाव से गाया और पढ़ा करते हैं। पद्य सब सरल और प्रसिद्ध कवियो के रचे हैं।

अपनी ओर से इन पुस्तकों के मनोहर बनाने में मैंने कुछ उठा नहीं रखा हैं। मुझे विश्वास है कि पाठशालाओं मे ये पुस्तकें उसी चाह के साथ पढ़ी जाएंगी जिस चाह के साथ लिखी गयी हैं।

ई मार्सडन।

पाठ १।

संयुक्त अक्षर।

क्

क्क	क् + ख = क्ख	क् + ल =
क्र	क् + ष = क्ष	क् + व =

मक्खी   क्लेश

चक्र   पक्षी

र क्रोध न करना चाहिए। रुक्मिणी कृष्ण कं
ानी थीं। इस किताब के अक्षर बहुत ब
ड़े हैं। इस बालक का नाम मदनमोहन है

पाठ २।

ख ग

ख् + त = ख्त   ख् + श = ख्श

ग् + ग = ग्ग   ग् + ध = ग्ध

ग्वालिन   मुग्दर   बग्घी   योग्य

सुग्गा   तख़्त   गृह   अग्नि

लोहा बड़ी सख़्त धातु है। गुरबख़्श तख़्
र बैठा है। उस बग्घी में घोड़ों की जोड़
ुती है। वह बालक मुग्दर हिला रहा है

पाठ ३।

घ ङ*

ङ्+क=ङ्क   ङ्+ग=ङ्ग

ङ्+घ=ङ्घ   घ्+न=घ्न

घ्+र=घ्र

ाघ्र शीघ्र विघ्न घृत

ङ्का पङ्खा रङ्ग भङ्ग

सङ्गम मङ्गल

गङ्गा नदी हिमाचल से
कल कर बङ्गाले की
ड़ी में गिरती है।
ारस के पङ्खे बहुत
हूर हैं। सींक की कङ्घियां बहु
ती हैं। लङ्का का टापू यहां से
ओर है। किसी काम में विघ्न
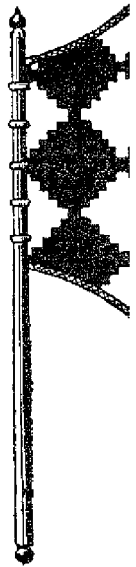
पाठ ४।

च छ

च् + च = च्च   च् + छ = च्छ   छ + य = छ्य

कच्चा	सच्चा	बच्चा
गुच्छा	लच्छा	अच्छा

छ्यालीस
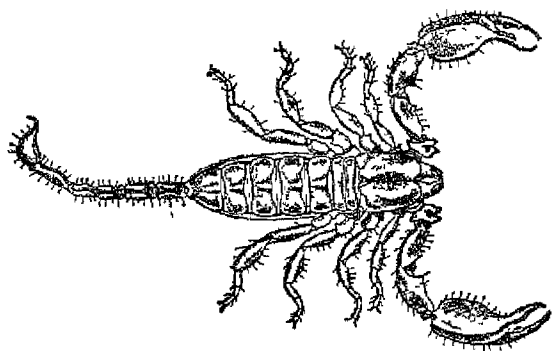
अच्छा लड़का मन लगा कर पढ़ता
टे बच्चों से कड़ी बात न करनी चाहि
नने यह फूलों का गुच्छा कहां से लिय
च्छू का डङ्क बड़ा विषैला होता है। हमे

पाठ ९।

ञ झ॰ ञ

ज्+य=ज्य ञ्+ज=ञ्ज ज्+र=ज्र

ञ्+झ=ञ्झ ज+ञ=ज्ञ

राज्य	लज्जा	सज्जन
वज्र	ज्वाला	इञ्जन
झञ्झट	झञ्झार	रञ्जक
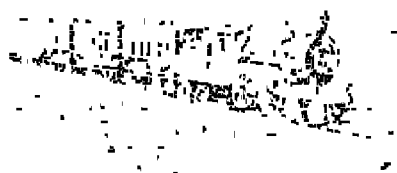
सरकारी राज्य में किसी को दुख नहीं है
ाब भारत का एक सूबा है। कड़ी बा
र सी लगती है। इञ्जन भाप के बल
त सी गाड़ियां खींचता है। मञ्जन कर

ठ लोग गाञ्जा चरस पाते हैं। सज्जन पुरु
ोई नशे की चीज़ नहीं सेवन करते। मे
ाथ तुम्हारे हाथ से बहुत ज़्यादा बड़ा है।

पाठ ६।

ट ठ ड ढ ण

ट्+ट=ट्ट ट्+ठ=ट्ठ ड्+ड=ड्ड
ड्+य=ड्य ढ्+य=ढ्य ण्+ठ=ण्ठ
ण्+ड=ण्ड

खट्टा गड्ढा कण्ठ डण्डा
मिट्टी चिट्ठी गड्डर हण्टर

नैपाल के टट्टू बड़े मेहनत
होते हैं। कल मेरे भाई
मुझे एक चिट्ठी भेजी थी
रामलाल एक बड़े धनाढ्य क
लड़का है। यह बालक सो

पुण्य से भला होता है। तुम्हारी ड्योढ़ी में एक बुड्ढा आदमी खड़ा है। उसकी हड्डी हड्डी दिखलाई पड़ती है।

पाठ ७।

त थ द ध न

त्+क=त्क	त्+त=त्त	त्+र=त्र
थ्+व=थ्व	द्+ग=द्ग	द्+द=द्द
द्+ध=द्ध	द्+व=द्व	द्+भ=द्भ
द्+म=द्म	द्+र=द्र	ध्+य=ध्य
न्+द=न्द	न्+न=न्न	न्+र=न्र
	स्+त=स्त	

कुत्ता	पत्ता	उत्तर	पत्थर	सत्कार
पुत्र	मित्र	आत्मा	सत्य	उत्पात
चिन्ता	मन्दिर	अन्ध	अन्न	सन्मुख
गद्दी	भद्दा	बुद्धि	विद्वान	हरद्वार
अद्भुत	विद्या	रुद्र	पद्मावती	पृथ्वी
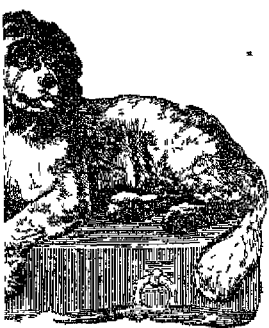
की चौकी पर बैठ जाओ। ह
ी रत्न है। छोटे बालक बड़ा अ
रहे हैं। हम
का नाम सुमि
है। पृथ्वी न
भांति गोल ह
चौकी बहुत
है। पश्चात
र रानी थी। विद्या पढ़ने से
ा है। दरिद्री पुरुष द्वार ढ
ा हैं। कल संध्या समय
लोग घूमने गये थे। गली
लक कनकौआ उड़ा रहे
रामायण पढ़ने से बड़ा
ंद मिलता है। कैदी

पाठ ८।

प फ ब भ म

प्+प=प्प प्+य=प्य फ्+फ=फ्फ

फ्+र=फ्र व्+य=व्य व्+व=व्व

ब्+र=ब्र भ्+र=भ्र म्+क=म्क

म्+भ=म्भ

मुझ को बड़ी प्यास लगी है।
नवर को प्राण बहुत प्यारा होता
। तेल के कुप्पे में छेद हो गया
। तुमने कभी अप्सराओं का नाम सुन
। फ्रांस यूरप का एक देश है। इ
स्तक का कुछ दाम नहीं यह मुफ्त
लती है। इस सन्दूक का कब्जा बहु
ा है। यह शब्द कठिन है, मुझ से नहीं
ा जाता। व्यापार से धन मिलता है

पाठ ६ ।

य र ल व

थ = थ्य   र् + क = र्क   र् + थ =

क = ल्क   व् + व = व्व   व् + य =

थ्या   खर्च   अहिल्य

र्व   मिर्च   कुल्हाड़

ल्दी   छिल्का   गुल्ज़ार
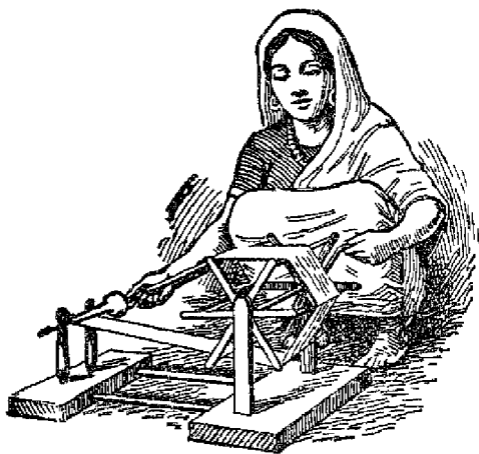
ड़े हर्ष की बात है कि तुम अ

औरत चर्खा कात रही है। तुम्हारी बात मेरी समझ में बिलकुल नहीं आई। कटहल का छिल्का बहुत मोटा और कटीला होता है। बिल्ली और कुत्ते में सदा वैर रहता है। कहते हैं कि कौवे की बड़ी उम्र होती है। कुम्भकर्ण रावण का भाई था। यह फल निकम्मा है, खाने योग्य नहीं। कठिन से कठिन काम अभ्यास करने से आसान हो जाता है।

पाठ १०।

श ष स ह

श् + र = श्र   श् + क = श्क   ष् + ण = ष्ण

स् + य = स्य   ह् + य = ह्य   ह् + र = ह्र

ह् + न = ह्न

मुश्क   तश्तरी   निश्चय

मुश्क बड़ी सुगंधित वस्तु है। दूध तश्त
ढांक दो। मथुरा में श्रीकृष्ण के बड़े ब
न्दिर हैं। प्रह्लाद का जन्म मुलतान नगर
आ था। आप का प्रश्न मेरी समझ में नह
ाया। भारी और लगातार वृष्टि होने
ती को बड़ी हानि पहुंचती है। ग्रीष
ाल में धूप बड़ी कड़ी होती है। मनुष्य
ाए झूट बोलना बड़ा पाप है। स्त्रियों क
दय बड़ा कोमल होता है, उनसे किसी क
ष्ट नहीं देखा जाता।

पाठ ११ ।

राजा एक गांव के पास डेरा
। उसके नौकर उसके लिये
हे थे । नमक कम होगया । एक
लाने के लिये पास के गांव को

टी सी बात से गांव कैसे बिगड़ सकता है।
जा ने उत्तर दिया, "जब अत्याचार पहि
हले हुआ था तब थोड़ा ही था। औरों
सको ऐसा कर दिया है कि राजा अप
जा के बाग़ से एक आम तोड़ कर खाले त
सके नौकर पेड़ ही काट कर गिरा देते हैं।

पाठ १२।

कहते हैं कि लखनऊ के नव्वाब शुजाउद्दौल
हादुर बड़े बलवान थे। उनकी भुजाओं
ड़ा बल था।

एक बार एक बड़ा प्रसिद्ध पहलवान उन
म्मुख दर्बार में आया और बड़ी बड़ी ताक
कलायें दिखाईं। नवाब उससे बहुत प्रस
ए और उसको एक अशर्फी इनाम में दी।

मेलती है।" नवाब को आ
र उसको दूसरी अशर्फ़ी दिलवा
ने उसको भी वैसेही मल डाला

तीसरी अशर्फ़ी का भी उसने यह

अशर्फ़ी मलती है तो क्या हुआ। देखत
हीं सोना खरा है।"

तब तो पहलवान बहुत लज्जित हुआ औ
उनके पैरों पर गिर पड़ा और अपनी गुस्ताख़
की क्षमा मांगी।

पाठ १३।

एक बालक बड़ा दुष्ट था। वह छोटे
जानवरों को बड़ा कष्ट दिया करता था; छोटे
छोटे बिल्ली के बच्चों को गला दबा कर कष्ट
देता; चिड़ियों के घोंसलों से उनके बच्चे
उठा लाता और उन्हें बड़ा दुख देता।

एक दिन उसने गिलहरी पकड़ने के लिए
एक फन्दा बनाया, एक लकड़ी की कैंची मे
डोरी बांध कर एक पत्थर की सिल उसके

र डोरी खींचती झट वह सिल उसके ऊप
पड़ती और वह पिच जाती। यह क
र ऐसे ही गिलहरियों को दुःख दे चुका था
क दिन वह बालक खुद ही खेलते खेलते उ
ड्डे के पास चला गया। अचानक उसक
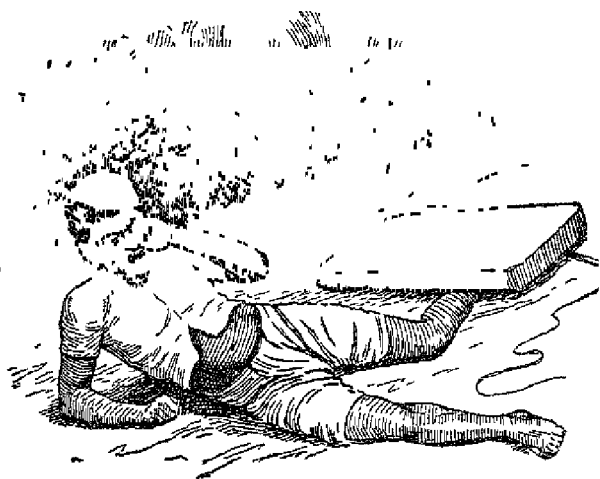
लकड़ी से लगा और सिल उसके पैर प
र पड़ी और उसकी उंगलियां कुचल गईं।

रहा है और मैं प्रण करता हूं कि अब
सी को कष्ट न दूंगा।

अब उस बालक से सब ही प्रसन्न रहते
योंकि वह किसी को कष्ट नहीं देता।

पाठ १४।

खिलाड़ी बालक और बूढ़ा तोता।

गोपाल एक छोटा सा बालक था। उसके
चा ने बसन्त के मेले से उसे तोता ला दिया
पाल ने उसे पिञ्जरे में बन्द कर दिया
तिदिन उसके खाने को नाना प्रकार के फल
ादि देता था। उसका तोते से बहुत प्रे
गया था।

गोपाल कभी कभी अपने प्रिय तोते को
ञ्जरे से निकाल कर अपने हाथ पर बैठात

गोपाल की माता ने तोते को कुछ शब्द कण्ठ करा दिये। प्रातःकाल उठ कर वह कहा करता था। गोपाल उठो उठो मुख और हाथ धो, पुस्तकें लेकर पाठशाला में जाओ।

पाठशाला से गोपाल वापस आकर तोते को

पाल बहुत प्रसन्न हुआ, उसके साथ चल
या और चिरकाल खेलता रहा। रात्री
मय वापस आया और थक कर सो गय
र तोते को खाना देना भूल गया।
दूसरे दिन भी प्रातःकाल उठ कर पाठशाल
ला गया और बालकों के साथ खेलता कूद
र लट्टू फिराता रहा, रात्री को फिर आ क
गया और तोते को खिलाना याद न रहा।
तीसरे दिन याद आया तुरंत उठ कर ए
ना लेकर पिञ्जरे के पास गया। तोता भूर
ास के मारे अचेत पड़ा था, बहुत शिथल ह
या था। गोपाल ने जाना कि तोते में अ
ग नहीं है बहुत बिलाप करने लगा उसक
ता दौड़ी आई और तोते को बाह
काला और जल पिलाया थोड़े समय के पी
के ने आंख खोली।

ब जीवों पर दया करनी चाहिए इस प्रकार
यामय परमात्मा तुम पर प्रसन्न रहेंगे ।

पाठ १५ ।

एक दिन एक लोमड़ी ने एक खरहे से
हा, "अजी तुम कैसे बोदे जानवर हो कि
म्हें देख कर कोई भी नहीं डरता ।"

खरहा बोला, "और तुम्हें ही देख के कौन
रता है ?" लोमड़ी ने कहा, यह मत कहो
झे तो देख के बड़े बड़े कांप जाते हैं । तुम
री दुम देखते हो, जहां मैं इसे हिलाती ह
स लोग समझते हैं कि भेड़िया आ ही गय
ौर मारे डर के भाग जाते हैं । खर
कहा, "अच्छा देखो मैं दिखाता हूँ कि मुझ
भी लोग डरते हैं ।"

समझ कर कि यह अचानक बला
आ पड़ी इधर उधर भागने लगीं। लो
ा उठी, "वाह वाह मैं तुम्हें ऐसा

झी थी। तुम तो बड़े बहादुर निक

पाठ १६ ।

किसी गांव में एक बूढ़ा मज़दूर रहता था
क दिन बूढ़े ने सोचा, "मेरे मरने का दि
कट आ गया पर मैंने अभी तक कोई भल
म नहीं किया। अब कोई अच्छा का
रना चाहिये।"

कुछ सोच विचार कर बूढ़े ने बड़ी मेहन
और दो पैसे और रोज़ से ज्यादा पैदा क
ये। इन दो पैसों के उसने आम ख़रीदे
मों का गूदा तो वह खा गया पर उनक
ठलियां एक झोले में रखलीं। इसी तर
नित्य आम ले आता और उनकी गुठलिय
ले में रखता। जब झोला भर गया त
से कंधे पर डाल कर बाहर ले आया औ
ती में एक एक छेद कर के गुठली बो

बोने से तुम्हें क्या लाभ होगा ?" बुड्ढे
हता "अरे भाई ! मुझे न होगा तो किसी
तो होहीगा ।"

आखिर बूढ़ा एक दिन मर गया । आज
स नगर में जहां वह रहता था सैकड़ों पेड़
आम के लगे हैं और लोग खूब आम खाते हैं
और जो तुम किसी से पूछो कि यहां इतने
ड़ क्यों हैं तो वह तुम्हें बूढ़े मज़दूर का
त्तान्त सुना देगा और कहेगा कि वह बड़ा
ला आदमी था ।

पाठ १७ ।

एक दिन एक लङ्गड़ा आदमी अपनी
साखी टेकता हुआ चला जाता था । वह
बहुत दूर नहीं गया था कि उसकी बैसाखी

लड़का अपनी गाड़ी में बै
ने पढ़ कर लौट रहा था।   उ
लङ्गड़े की दशा देखी और उस

उस लड़के को बहुत बहुत असीस दी। इस लड़के ने बहुत अच्छा काम किया। ऐसे लड़के सब को प्यारे होते हैं। परमेश्वर भी उनको चाहता है।

पाठ १८।

मोहन रहा बड़ा हत्यारा।
उसने अपना संगी मारा॥
बड़ा था संगी का परवार।
सुनकर उसके नातेदार॥
सब दौड़े मोहन को धरने।
मोहन लगा चौकड़ी भरने॥
पहुंचा मोहन नदी किनारे।
कूदा जल में डर के मारे॥
देखा वहां मगर मुंह बाये।

मोहन ने पकड़ी जो डाली।
उस पर देखी नागिन काली॥

कूदा जल में उसके डर से।

पाठ १६ ।

सुग्गी और मुन्ना ।

गी और मुन्ना खेत के किनारे बैठे

। इनके मां बाप बड़े ग़रीब हैं। इतने
ीब हैं कि खाने पहिनने को भी मुश्किल
मिलता है।
मुन्ना सुग्गी से कह रहा है कि देखो मैं
क तर्कीब सोची है जिससे मैं कुछ पैसे रोज़
ा सकता हूं। मैं ज़िमींदार की गाय
ाऊंगा, जो पैसा मिलेगा उस से कुछ कुछ
ज़ बचाता जाऊंगा। जब तीन चार रुपये
जायंगे तो कुछ कपड़ा ख़रीद लाऊंगा और
म बाबा के वास्ते मिर्जई सी देना। परन्तु
ाई जाने नहीं। जब होली होगी तो उनको
ग कपड़ा भेंट देंगे। मुन्ना और सुग्गी ने
ा इरादा किया था वह पूरा हुआ और उन्होंने
पने बाप को वह कपड़ा होली के दिन दिया
ौर पूछने पर कुछ हाल भी कह दिया

पाठ २०।

प्रह्लाद के पास एक काला कुत्ता है
के कान बहुत छोटे छोटे हैं। पर उसक
पर बड़े बड़े बाल हैं। यह कुत्ता इत

प्रह्लाद कभी कभी इसको तालाब के किना
जाता है। यह लकड़ी के टुकड़े नदी
हा देता है और कुत्ता नदी में कूद कर उ
र उठा ले आता है।

रात को जब प्रह्लाद सोता है तो यह भ
सके पैताने पड़ रहता है और सबेरा हो
क किसी को उसके पास नहीं जाने देता।

यह कुत्ता घर की भी रखवाली करता है
ब ज़रा भी खटका होता है यह भोंकने लगत
और फिर किसी की मजाल नहीं कि को
र के भीतर आ सके।

पाठ २१।

कहते हैं कि एक बार बादशाह औरङ्गज़े
ना समेत दक्खिन को जा रहा था। रास्

ज़ेब उसकी बातों से प्रसन्न हो कर
"अच्छा बतलाओ, हमारा
भारी है।" मल्लाह ने एक

द उसने हाथी को उतार दिया और ना
पत्थर के टुकड़े लादने लगा और नाव क
ना लादा जिस में वह पानी में उतनी ह
तक डूब जाय, जहां तक रेखा खिंची थी
नके पीछे उसने पत्थर उतार कर तौल डा
र बादशाह को हाथी का बोझ बतला दिया
दशाह उसकी चतुराई से बहुत प्रसन्न हुआ
र नदी के तीर पर जिस गांव में मल्ला
ता था उसका नाम तौलपुर रख दिय
र उसी मल्लाह को दे दिया।

पाठ २२।

भैयाचारे का इक ग्राम।
है भगवतपुर उसका नाम॥
उसमें थे दो पट्टीदार।

भगवतपुर के लोग लुगाई ।
कहते उसको रम्मू भाई ॥
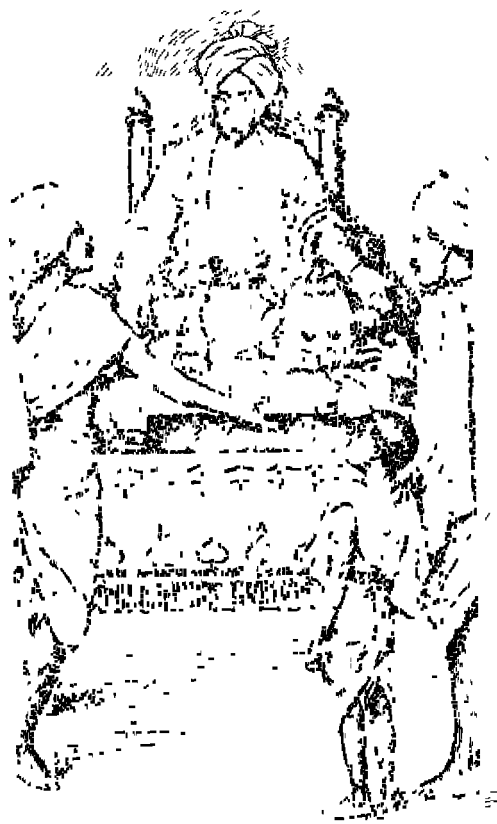
पूरा किया न उसने वादा ।
बनिये का था कड़ा तगादा
अपना खेत तलैयावाला ।
वेंच हाथ रम्मू के डाला ॥
रम्मू ने जो खेत गुड़वाया ।
उसमें बहुत गड़ा धन पाया
मन्नू को चट वहीं पुकारा ।
बोला "लो यह माल तुम्हार
हमने दिया खेत का दाम ।
इस धन से हम को क्या का
मन्नू बोला "खेत तुम्हारा ।
इसमें गड़ा पड़ा धन सारा ॥
सबके एक तुम्ही हो मालिव
इसमें वरवस करो न झिक
दोनों में से एक न मानै ।

क़ाज़ी को सब हाल सुनाया।
वह भी सुन करके घबराया॥
बोला बड़ा कठिन है न्याय।
मैं बतलाऊं एक उपाय॥
होगा अभी मामला साफ़।
दोनों मानोगे इन्साफ़॥
मन्नू है जो पुत्र तुम्हारा।
है तुमको वह कैसा प्यारा॥
रम्मू को है बेटी क्वारी।
जोड़ इसी के है सुकुमारी॥
दोनों का विवाह तुम कर दो।
यह धन उनके आगे धर दो॥
इस पर दोनों हो गये राज़ी।
बोले वाह धन्य हो क़ाज़ी॥

पाठ २३।

हुत दिन हुए एक लकड़हारा अ
बच्चों के साथ किसी जङ्गल में रह

एक दिन दोनों स्त्री पुरुष बच्चों को छोड़ कर
स के नगर में किसी काम को गये थे। कुछ
मय बीतने पर घटा छा गयी, और पानी बड़े
ार से बरसने लगा। संयोग वस वहां का राजा
सी रोज शिकार खेलने उस जंगल में आया था
ौर अपने साथियों से अलग होगया था; पानी
बचने के लिए उस झोपड़े में चला आया
ालकों ने उसे नहीं पहिचाना। पहिले तो ये
से देख कर डरे, पर जब उसने इनसे हँस हँस
बातें कीं तो ये भी उनसे बातें करने लगे।
राजा ने कहा, "हम इस पानी से कैसे बचें
मे बड़ी दूर जाना है।"
लड़का बोला "हमारे पास एक बड़ा बढ़िया
कम्मल है उसे ओढ़लो तो न भींगोगे। प
ाह बाबा का है। मैं तुम्हें दे नहीं सकता।"

म्मल देख कर मुस्कराया क्योंकि यह एक
हुत पुराना काला कम्मल था और बोला
अगर यह कम्मल मुझे दे दो तो मैं इसे
म्हारे पास कल सवेरे पहुंचा दूंगा।"

लड़का बोला, "हम बिना बाबा के कहे
से देदें। वह हम पर चिढ़ेंगे।"

लड़की बोली। "अजी तुम लेभी जाओ, मैं
हीं चाहती कि तुम भींगो। कल सवेरे ही
हुंचवा देना लेकिन देखो फटे फटावे नहीं।"

राजा ने कहा। "तुम इससे मत डरो
कल इसमें रुपये भरके भेज दूंगा।" यह
ह कर राजा चला गया।

शाम होते होते लकड़हारा और उसकी
त्री भी आ पहुंची, पर लड़कों ने उनसे कम्मल
ी बात नहीं कही, क्योंकि वे जानते थे कि

न मिला तो चिल्लाया, "अरे मेरा कम्मल
ा हुआ?" बालक ने कल की सारी बातें
ह दीं। लकड़हारा बहुत बिगड़ा। बोला
ख़बर्दार मेरी चीज़ कभी बे मेरे कहे किसी
मत देना।" लड़की ने कहा, "बाबा, व
ादमी बड़ा भला मानुष जान पड़ता था
म्हारा कम्मल जरूर भेज देगा।"

इतने में राजा के दो आदमी एक काले कम्मल
ा गट्ठर लिये हुए झोपड़े में चले आये औ
ट्ठर लकड़हारे के आगे रख कर बोले, "कल
राजासाहब ने तुम्हारे लड़कों से एक कम्मल
उधार लिया था, अब उन्होंने इसे लौटा दिया
और लड़कों को कुछ मिठाई खाने के लि
ो भेजा है।" इतना कह कर वह चल दिये

लकड़हारे ने जब कम्मल खोला तो उस
ासे बंधे हुए थे। किसान ने राजा को बहु

पाठ २४।

हरि ! तुम हो जग के करता
तुम्ही पालते सब संसार ॥
तुमने सुन्दर पेड़ उगाए।
रंग रंग के फूल खिलाए ॥
ऊंचा पर्वत कहीं बनाया।
कहीं खाल में नीर बहाया ॥
लाखों जीव जन्तु रच डाले।
लाल, सुनहरे, कबरे, काले ॥
मानुष सब से सुघर बनाया
सब से बढ़ कर ज्ञान सिखा
महिमा तुम्हरी है भगवान !
हम किस मुख से करें बखान
दया दृष्टि प्रभु हम पर कीजे
हम अजान को विद्या दीजे ।

सुगमता से भाषा सिखानेवाली

व्याकरण-पुस्तकें

नेस्फील्ड कृत

सरल हिन्दी-व्याकरण

भाग १ला पृष्ठ संख्या २१ मूल्य -)

भाग २रा पृष्ठ संख्या ४१ मूल्य =)

विषय सूची

भाग १ला

भाग २रा